



Thursday, June 16, 2016

After over three decades of wait, IAF will finally get its first squadron of indigenously-built Tejas

New Delhi: After waiting for more than three decades, the IAF will finally get its first squadron of the indigenous-built Tejas in July.

The first squadron will be made up of just four Tejas aircraft, and the fourth light combat plane will be delivered to the Air Force on July 1.

Globally, a squadron consists of at least 16 aircraft.

According to PTI, the four aircraft will be used only for training and familiarisation.

The state-run Hindustan Aeronautics Limited is the manufacturer of Tejas.

Rather than waiting for LAC Mk II, IAF had decided to go in with an upgraded version of the existing Tejas with over 40 modifications, the report said.

IAF currently plans to acquire 120 Tejas aircraft, with 100 of these having major modifications.

The force wants Active Electrically Scanned Array (AESA) Radar, Unified Electronic Warfare (EW) Suite, mid-air refuelling capacity and beyond the vision range missiles.

As per the production plan, six aircraft will be made this year (2015-16) and HAL will subsequently scale it up to eight and 16 aircraft per year.

दैनिक जागरण

Thursday, 16 June, 2016

थाइलैंड को होगी ब्रह्मोस बेचने की कोशिश

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

थाइलैंड के प्रधानमंत्री प्रयुत चान-ओ-चा की गुरुवार से शुरू हो रही तीन दिवसीय यात्रा के दौरान भारत अपनी एक्ट ईस्ट पॉलिसी को नए स्तर पर पहुंचाने की कोशिश करेगा। थाइलैंड और भारत के बीच रक्षा क्षेत्र और सामुद्रिक सहयोग में गहरे संबंध स्थापित करने के लिए यह यात्रा काफी अहम साबित हो सकती है। खास तौर पर थाइलैंड के साथ भारतीय मिसाइल ब्रह्मोस की खरीद पर अहम चर्चा होने के आसार हैं। हाल ही में भारत मिसाइल तकनीकी हस्तांतरण से जुड़ी अंतरराष्ट्रीय संधि एमटीसीआर का सदस्य बना है और अब वह दूसरे देशों को ब्रह्मोस जैसे मिसाइल बेच सकता है। ऐसे में थाइलैंड के साथ इस बारे में होने वाली बातचीत काफी अहम होगी।

विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) प्रीति सरन ने बताया कि शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चान-ओ-चा के बीच विस्तार से द्विपक्षीय रिश्तों पर बात होगी। इसमें द्विपक्षीय कारोबार और रक्षा सहयोग केंद्र में होगा। द्विपक्षीय कारोबार की रफ्तार पहले से ही काफी तेज है। पिछले 15 वर्षों में भारत और थाइलैंड के बीच द्विपक्षीय कारोबार आठ गुना बढ़कर 8 अरब डॉलर का हो चुका है।

अभी दोनों देशों के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को लेकर काफी समय से बात हो रही है। माना जाता है कि थाई पीएम भारतीय पक्ष से इस वार्ता को तेजी से आगे बढ़ाने का आग्रह करेंगे। भारत और थाइलैंड

द्विपक्षीय कारोबार को अगले पांच वर्षों में दोगुना करने पर विचार कर रहे हैं।

सूत्रों की मानें तो भारत और थाइलैंड के बीच साउथ चाइना सी को लेकर बातचीत होती है तो इस पर पूर्वी एशिया के अन्य देशों के साथ चीन की भी निगाहें होंगी। थाइलैंड इस बेहद चर्चित समुद्री हिस्से में चीन की बढ़ती गतिविधियों से काफी परेशान है। इस बारे में वह सार्वजनिक तौर पर अपना रोष जता चुका है। अमेरिका और जापान के साथ भारत भी इस इलाके में चीन की बढ़ती गतिविधियों पर परोक्ष तौर पर अपनी नाराजगी जता चुका है। पिछले कुछ समय से भारत और थाइलैंड के बीच सैन्य स्तर पर बढ़ते रिश्ते को चीन की गतिविधियों से ही जोड़ कर देखा जाता है। पिछले वर्ष भारतीय वायु सेना और नौ सेना के प्रमुख थाइलैंड की यात्रा कर चुके हैं। भारत और थाइलैंड की वायु सेना और नौ सेना के उच्च स्तर के अधिकारियों के बीच काफी बातचीत होती रही है। हाल ही में रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर और रक्षा अनुसंधान संगठन प्रमुख ने भी थाइलैंड की यात्रा की थी। माना जाता है कि थाइलैंड ने भारत से मध्यम दूरी की मार करने वाली कूज मिसाइल ब्रह्मोस को खरीदने की इच्छा जताई है। थाइलैंड के अलावा पूर्वी एशिया के विएतनाम और इंडोनेशिया भी इसके संभावित खरीदारों में हैं।